

Provide Accident and Medical Care to All Workers

Mohammad Khalid, a construction labourer from Aligarh, works for a Delhi based contractor. Since the contractor belongs to the same community as Khalid, and knew Khalid's father well, his employment has been continuous for the last few years. In the beginning, Khalid used to stay in a makeshift arrangements provided by the contractor at the construction sites, but later moved into a rented jhuggie for Rs. 1800 per month. A few months ago, he brought his wife Jameela Begham, his three year old son and one year old daughter to Delhi.

Khalid works for Rs. 151 per day, the fixed minimum wage in Delhi for a construction labourer. He was content with the money he earned through his hard work. His wife Jameela, an illiterate young village woman was also not over ambitious in life. Their ultimate aim was to provide basic education for their children and give them a better life.

Everything was fine in Khalid's life until one fateful day – while carrying a head load of gravel, Khalid slipped and fell down on his back into a deep gorge. He fell unconscious and was immediately rushed to a nearby government hospital with a fracture on his hip bone and a hairline crack on the vertebra. Khalid was advised complete bed rest for at least 6 months, with no hope of resuming work in the near future. Upon his release from the hospital, the contractor paid the hospital fees and terminated his contract???. He did not inquire what happened to Khalid and his family after the accident.

Belonging to a family of landless agricultural labourers, Khalid's family had no hope of seeking help from his poor family or relatives. "I have no clue how to go ahead. I need to buy my medicines, food for my family, the rent has to be paid. My wife is so naïve, and has not yet got used to city life. How will we survive?" laments Khalid.

He says he understands the attitude of the private contractor who dumped him when he as of no use, but wonders why the government cannot step in and help. "...Isn't it their duty to help us? Aren't we contributing in building this city?", he asks.

He reiterates his frustration by stating that "Government only needs our vote, they are not bothered about people like us".

When the much talked about Unorganized Workers Social Security (UWSS) Act, 2008 was passed, the working class had a lot of expectations. But, in reality, the Act does not address the real issues of workers. When worksite accidents are quite common, the Act does not have any scheme or provision laid out to cater to the need of workers on these issues.

The UWSS Act, 2008 should address the problems faced by the workers and their families during accidents. The government should introduce provision in the act to include accident and medical care, and not restrict it to BPL families. Besides full coverage of hospitalisation and medical expenses, there should be provisions to help families whose sole bread winner turns invalid.

*Sindhu Menon
Labour File
edit@labourfile.org*

सभी मजदूरों को दुर्घटना और चिकित्सा सुविधा दो

मोहम्मद खालिद अलीगढ़ से दिल्ली आया था। वह कई साल से एक ठेकेदार के पास निर्माण मजदूर था। ठेकेदार खालिद के पिता को भी अच्छी तरह जानता है इसलिए पिछले 5 साल से खालिद की नौकरी बदस्तूर जारी है। शुरू में खालिद निर्माण स्थलों पर ठेकेदार द्वारा बनायी गयी कामचलाऊ खोलियों में रहता था लेकिन बाद में उसने 1800 रुपये माहवार खर्चे पर एक झुग्गी किराये पर ले ली। कुछ महीने पहले वह अपनी पत्नी जमीला बेगम, तीन साल के बेटे और एक साल की बेटी को भी दिल्ली ले आया।

खालिद 151 रुपये रोजाना की दिहाड़ी पर काम करता था। दिल्ली में निर्माण मजदूरों के लिए यही न्यूनतम मजदूरी है। खालिद अपनी कमरतोड़ मेहनत की कमाई से खुश था। उसकी पत्नी जमीला को भी जिंदगी से बहुत ज्यादा उम्मीदें नहीं थीं। जमीला गांव की एक अनपढ़ युवती है। इन दोनों का सबसे बड़ा सपना यही था कि वे अपने बच्चों को जरूरी शिक्षा और एक बेहतर जिंदगी दे सकें।

खालिद की जिंदगी में सब कुछ ठीक ही चल रहा था कि एक दिन तसले में बजरी और मसाला ले जाते हुए उसका पैर फिसल गया और वह पीठ के बल गहरे गड्ढे में जा गिरा। चोट बहुत गहरी थी और खालिद फौरन बेहोश हो गया। उसे फौरन एक सरकारी अस्पताल में भर्ती कराया गया। वहां पता चला कि उसकी कूल्हे की हड्डी टूट गयी है और रीढ़ की हड्डी में बाल बराबर दरार पड़ गयी है। खालिद को छह महीने तक मुकम्मल आराम की सलाह दी गयी। निकट भविष्य में उसके काम पर लौट आने की कोई उम्मीद नहीं थी। अस्पताल से छुट्टी मिलने पर ठेकेदार ने उसके अस्पताल का खर्चा तो चुका दिया लेकिन उसको नौकरी से भी हटा दिया। उसने ये जानना भी जरूरी नहीं समझा कि इस हादसे के बाद खालिद और उसके परिवार पर क्या गुजरी होगी।

खेतिहर मजदूरों के परिवार में जन्मे खालिद की पत्नी को अपने परिवार या रिश्तेदारों से मदद की कोई उम्मीद नहीं थी। अब खालिद को एक ही दुख है: “समझ में नहीं आता कि अब जिंदगी कैसे चलेगी। मुझे दवाई भी खरीदनी है, सबसे लिए खाने-पीने का इंतजाम भी करना है और भाड़ा भी चुकाना है। मेरी बीबी बहुत भोली है। उसे अभी शहर के तौर-तरीके मालूम नहीं हैं। अब भला कैसे जिंदगी चलेगी?”

उसका कहना है कि उसे ठेकेदार से शिकायत नहीं है। वह तो इस बात से हैरान है कि ऐसे मौकों पर सरकार जरूरतमंदों की मदद क्यों नहीं करती। “...क्या हमारी मदद करना सरकार की जिम्मेदारी नहीं है? क्या हम इस शहर को बनाने में योगदान नहीं देते?” वह पूछता है।

वह बार-बार कहता है कि “सरकार को सिर्फ हमारा वोट चाहिए। उसे हमारे जैसे लोगों की कोई परवाह नहीं है।” अब खालिद हर तरफ से हताश है।

जब बहुचर्चित असंगठित मजदूर सामाजिक सुरक्षा (यूडब्ल्यूएसएस) अधिनियम, 2008 पारित किया गया था तो मजदूरों को बहुत सारी उम्मीदें थीं। लेकिन यह कानून तो मजदूरों के असली मुद्दों को संबोधित ही नहीं करता। जब कार्यस्थल पर दुर्घटनाएं इतनी आम हो गयी हैं तो भी इस अधिनियम में इन मसलों पर मजदूरों की जरूरतों को पूरा करने के लिए कोई योजना या प्रावधान शामिल नहीं किया गया है।

यूडब्ल्यूएसएस अधिनियम, 2008 में दुर्घटनाओं के दौरान या दुर्घटनाओं के कारण मजदूरों या उनके घरवालों के सामने पेश आने वाली समस्याओं पर ध्यान देना चाहिए। सरकार को अधिनियम में ये प्रावधान शामिल करना चाहिए कि केवल बीपीएल परिवारों को ही नहीं बल्कि सभी असंगठित मजदूर परिवारों को दुर्घटना एवं चिकित्सा सुविधा मिलेगी। न केवल दुर्घटना के शिकार मजदूर के अस्पताल में भर्ती होने और इलाज के खर्च का पूरा भुगतान किया जाना चाहिए बल्कि ऐसे परिवारों की मदद के लिए अलग से प्रावधान होना चाहिए जिनका एकमात्र कमाऊ सदस्य दुर्घटना की वजह से काम पर नहीं जा पा रहा है।